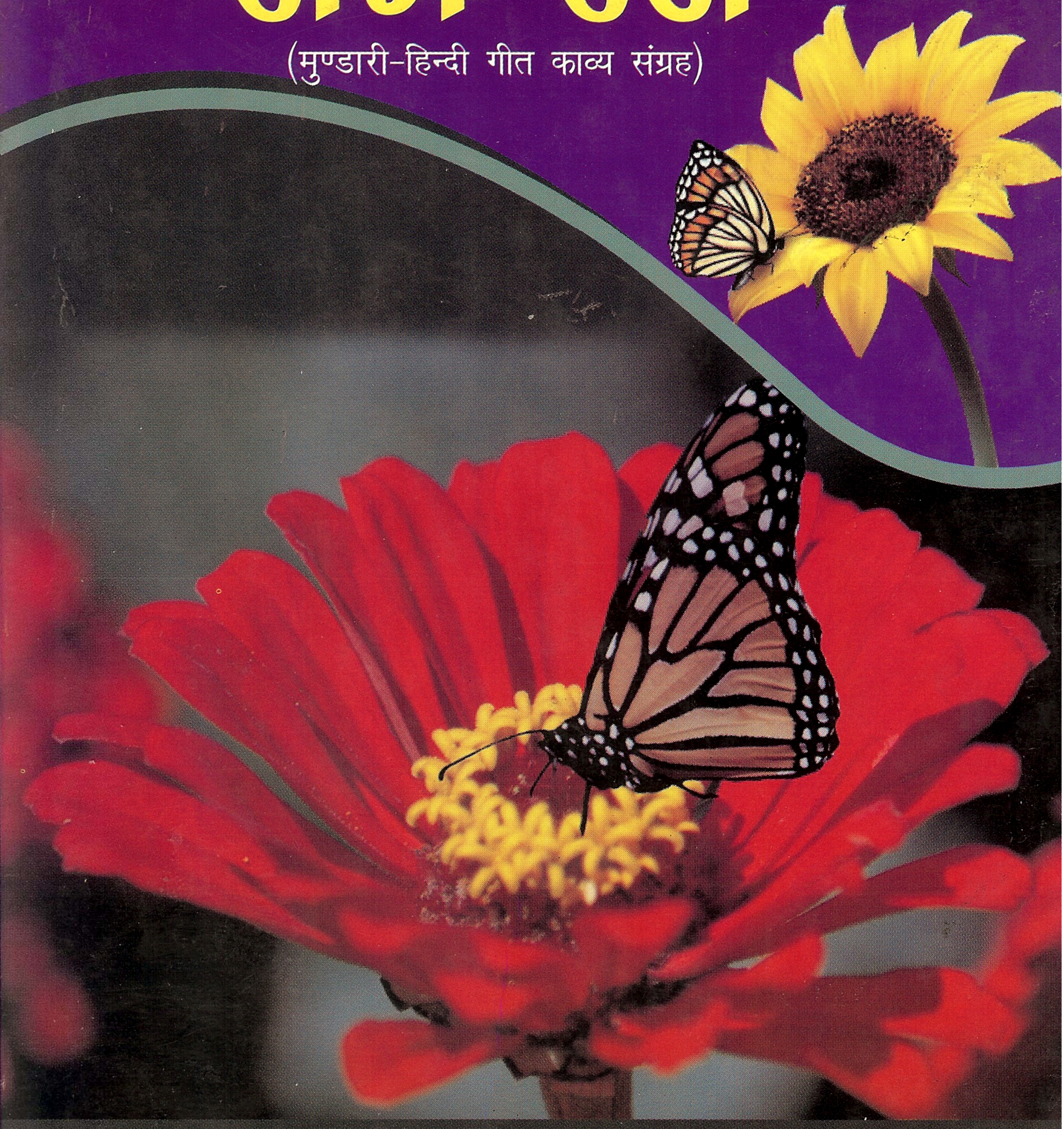
राम रस

(मुण्डारी-हिन्दी गीत काव्य संग्रह)



मंगल सिंह मुण्डा

राम रस

(मुण्डारी-हिन्दी गीत काव्य संग्रह)

गीतकार : राम मुण्डा

संकलन/सम्पादन/अनुवाद

मंगल सिंह मुण्डा

झारखण्ड झरोखा, राँची

ISBN : 978-93-85595-09-7

प्रथम संस्करण : 2015

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा

शोप नं.- डी. जी. 03, न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,

रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन नं. 834001

मो. 09973112040, 09471160792

E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

वितरक : क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी

28, शॉपिंग सेन्टर, कर्मपूरा, न्यू दिल्ली–110 015

दूरभाष : (O) 25465978, 65903449 (R) : 28542847

E-mail : classicalpc@gmail.com

अजिल्द : 50.00

सजिल्द : 100.00

RAM RAS

Edt. by Mangal Singh Munda

पिता स्व. राम मुण्डा

को

श्रद्धांजलि

राम मुण्डा

ग्राम- रंगरोंग, मौजा-बिचागुटु चेतन डीहटोला, पंचायत लान्दुप, खूँटी। जीवन काल 1899-1948, शिक्षा-मिडिल पास।

रंगरोंग से किताहातु गाँव जाते हुए मदकोमडोम, बिंग मःडीह, गिडुंग आदि गाँव पड़ते हैं जो साल वृक्ष के जंगल हो कर जाता है। राम प्रेमिका सुंड़की से मिलने इसी जंगल रास्ते से होकर आना-जाना करते थे। उन साल वृक्षों पर लदे फूलों को देखकर अनेक गीत रचना की। - गोला मुण्डा, किताहातु -21.03.2004

स्व. राम मुण्डा नाचने-गाने में बेहद रसिक थे। अखाड़े पर ही जोड़-जाड़कर गाना गाते थे। यहीं एक डाड़ी बनवाया जिसे राम डाड़ी कहते हैं।

- भंवर मुण्डा, किताहातु - 21.03.2004

प्रथम मापी (सेटेलमेंट 1927) तक राम मुण्डा की उम्र करीब 25 साल रही थी। - गंगु मुण्डा, हूँट

वे पुत्र मंगल सिंह के हमशक्ल थे। सिंहराय मानकी जोजोहातु के जैसा धोती-कुर्त्ता पहनते थे। उनका कद लम्बा, दुबला-पतला था। बदन गोरा, छाती पर बाल थे। वे नरम दिल स्वभाव के थे। कुड़ापूर्ति में मास्टरी करते थे। मनय (वर्तमान) के घर रहे। बाद में किताहातु बाजार टांड़ में सड़क के किनारे घर बनाकर रहने लगे। यहाँ रहते (किताहातु और कुड़ापूर्ति के बीच) एक डाड़ी बनवाया जो अब भी है। इसे राम डाड़ी के नाम से जाना जाता है। प्रथम विवाह बिरडी (बुण्डू) से लाया गया। पर औलाद नहीं हुए। किताहातु में रहते ही वहाँ की सुंड़की नामक कन्या से प्रेम-विवाह किया। सुंड़की से पुत्री फागुनी लोकमा तथा पुत्र मंगल उत्पन्न हुए।

नामी गीतकार थे। गीत रचना के समय रंगरोंग गाँव के ऊपर, बाँध के किनारे, पत्थर के टीलों पर बैठा करते थे। फिर कुदालोओंग नामक खेत के पास आम वृक्ष के तले बैठा करते थे। देहावसान (ग्रह लगना) -जोरों की बारिश होती है। बाढ़ आने लगती है। खेत टूट जाते हैं। झमाझम बारिश में ही कुदाल लेकर खेत बचाने के ख्याल से कुदाल लेकर खेत तक जाते हैं। वहाँ देखते हैं कि दो मोटे लम्बे पहाड़ी साँप बहे आ रहे हैं। उन्हें देख भय के मारे घर वापस आते हैं और इस घटना को बताते हैं। लोग बताते हैं कि यह तो बहुत बड़ा अपशकुन है। इस ग्रह को चांदी का सिक्का से न काटा जाय तो जान-माल को खतरा हो सकता है। गाँव-घर में चाँदी का सिक्का नहीं मिलता है। धीरे-धीरे उनकी तबीयत बिगड़ने लगती है और इसी क्रम में उनकी मृत्यु हो जाती है।

लोकमा (बहन)

20.03.1990 दिवड़ी, तमाड़

दो शब्द

हमारे लिये यह बेहद शर्म की बात है कि हमारे बीच रहे दिवंगत साहित्यकारों, कवियों और गीतकारों को एक-एक कर भूलते जा रहे हैं। यह गलत परम्परा किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कही जा सकती। यह तो हमारा एक प्रकार का बीमार मानसिकता है जो किसी अन्य वर्ग के लोगों में मिलना शायद मुश्किल है। इस बीमार मानसिकता की पराकाष्ठा ही है कि समाज के अनेक प्रबुद्ध विद्वान् अनेक बार मेरे स्वर्गीय पिता राम मुण्डा के विषय में कुछ खोज-खबर करने को उकसाते रहे। लेकिन मैं उनकी बातों को 1990 से अनसुना करता रहा था। मैं उनकी बातों के आगे प्रश्नचिह्न लगाता – राम मुण्डा ही क्यों? लेकिन उनकी बातों को बार-बार टालना उचित नहीं समझा और कागज-कलम, कैमरा, टेप आदि लेकर उनके सान्निध्य रहे बड़े-बुजुर्गों के पास आ पहुँचा। गीत रचना के समय पास के झुरमुटों, टीलों, तालाबों का दौरा किया।

पिताजी की साहित्यिक गतिविधियाँ 1925-35 के बीच थीं। वे मुझे गोद में ही छोड़कर चले गये। मुझे उनकी शक्ल-सूरत मालूम नहीं। होश सम्हालने के बाद पता चला कि शिक्षा के क्षेत्र में वे अपने क्षेत्र (ग्राम- रंगरोंग) के प्रथम ज्योतिस्तम्भ थे। वे एक योग्य शिक्षक, समाजसेवक, गीतकार एवं रसिक थे। मुण्डा समाज को जब सार्वजनिक रूप से देखता हूँ तो मुझे बेहद दुःख होता है। पिताजी के बाद दर्जनों हमारे बीच कवि, गीतकार हुए जो उपेक्षा के दलदल में अब भी (जीवित/दिवंगत) फंसे हुए हैं। इस फंसे हुए होने का कारण शायद हममें बौद्धिक सोच-विचार एवं इच्छाशक्ति की कमी है।

बहरहाल, मैंने अपने घरेलू पुस्तकालय को खंगालना शुरू किया और डूबते को तिनके का सहारा मिल ही गया। वह था – डॉ. रामदयाल मुण्डा के द्वारा संकलित 'हिसिर'। पर उसमें कवियों की जीवनी और गीतों के राग-संकेत नहीं हैं। कवि के हृदय में रवि बसता है। रवि के बगैर कवि नहीं हो सकता। इस रवि की खोज में दौड़-धूप करना पड़ता है जो आसान काम नहीं। पिताजी के बारे में अल्प मात्रा में ही तथ्य उपलब्ध हो सका।

प्रस्तुत पुस्तक 'राम-रस' में इसी रवि को खोजने का प्रयास किया गया है। गीतों के माहौल को ही अपने कल्पनाशीलता की उड़ान देकर शब्द-जाल बुना और

उनके गीतों को उद्धृत करता गया। अफसोस इस बात का है कि मैं हिसिर के अनन्य कवि, गीतकारों से न्याय नहीं कर सका।

निर्मित सोने के हार की चमक में किसी बाहरी सोनार की यह उछल-कूद शायद आप पाठकों को अच्छा लग जाए। इसी उम्मीद में-

पुत्र - मंगल सिंह मुण्डा तिरला, खूँटी

07.03.2011

विशेष - गीतकार के तब के मुण्डारी लेखन शैली को ही हू-ब-हू उतारी गई है। अतः इसमें आज की मेरी लेखन शैली नहीं दिखाई देगी। गीतों के राग भी उपलब्ध नहीं हो सके।

विषय सूची

1. सिंगि लेका सिरमा रे जुलेतन प्रभु

सिंगि लेका सिरमारे जुलेतन प्रभु
ओते सिरमा होम मरेसल केदा
ओते रे हुडिंग मरंग सोबेन को
अमः नुतुमेको हियतिंग तना
कजि मेने गेदो मेनःमेया
मेन्दो कागे होञ लेल दड़ि
दिसुम होड़ो को अयर तयोम
अमगः मण्डा गेको जरे तना
बुरू दिरि हाटा हुटु
अञ दो होञ दन्दा गिड़ि जना ・
बुरू जनर सुड़ा संगेन
अञः जी दो रड़ेः जना
अयर रेदो अयरिंग में
गड़ा परोम दिसुम टुन्डु ते
दोला रेदो दोलाईंग में
इचः बा रसि चेपेः ते

मोंट कजि :– सेतः-सेतः जब मेदिंञ अरिद जदा तोबे मसकल लेलोः तना आर नेक। अटकरोः तना चि एनरिंग रेड़ान तना...। रेड़ान तन लोः सोबेन लेकन चीज वस्तु को लेलोः तना, चिलका दो गड़ा दिरि बुरू तसद एड़ः, चेणे चिपरूब को...। हुरूई-हुरूई दोएवो रे दरू दड़ा सकम को एकेला तना। एन कोरे चेणें को आपिर बेड़ा तना। हुरूम सुकु को रों-रों तना.... कल-कल गड़ा लिंगि तना.......। अम मेन्ते नेया कोगेईञ अरिदा कः आर रसिका तेईञ चबा गिड़िओ। मेन्दो अम ओकोए तनिः कईञ इतुआना। एना मेन्ते लुतुम तेदो कईञ रः दड़िया मा। निमिन-निमिन चीज वस्तु कोरः लुतुमो कईञ इतुआना। हे ओकोआगे मेद तेईञ लेल जदा एन। रेगे अमेईञ लेलम जःमा। जी रेईञ जमा जःमा। एन। मेन्ते हे उकुआ कन होड़ो अमतः इदि रेदो इदिंञ में। अमतः सेनोः नगे-नेईञ अकाबकाव चबा जना। अईञः जी-कुकुरू अमः नगेन सनंञ रः अईउमेमे.....

1. आसमान के सूर्य से ज्योर्तिमय प्रभु

आसमान के सूर्य-सा ज्योतिर्मय प्रभु
तूने जमीन और आसमान को प्रकाशित किया
धरती पर के छोटे-बड़े सभी
तुम्हारा ही नाम याद करते हैं
कहने को ही तुम हो
किन्तु देख तो नहीं पाता
धरती के लोग आगे-पीछे
तुम्हारे पद्चिन्हों का पीछा करते हैं
पहाड़-पत्थर चट्टान टीले
देखकर मैं अचम्भित हो गया
पहाड़ की तराई में नई कोपलें
(देखकर) मेरे मन में शान्ति छा गई
ले ही चलना है तो ले चलो
नदी पार सीमा पार में
बुलाना है तो बुला लो
इचः फूल का रसास्वादन करने।

भावार्थ :- सुबह जब आँखें खोलता हूँ तो मुझे प्रकाश दिखाई देता है और ऐसा लगता है कि उस प्रकाश में नहा रहा हूँ। ...और नहाते वक्त उस प्रकाश में बहुत स।री चीजें दिखाई देती हैं। जैसे नदी नाले, पहाड़-पत्थर, जंगल-झाड़, पशु-पक्षी, बाघ-भालू, साँप-छछून्दर आदि। मन्द-मन्द हवा में पत्ते हिलते हैं। डाल-डाल चिड़ियाँ फुदकती फिरती हैं। नदियों का कल-कल... चिड़ियों का कलरव... भौंरों का गुंजन...। इन सारी चीजों के बीच मुँह लटकाए तुम्हें देखता हूँ। तुम्हें देखकर मेरा मन खिल-खिल जाता है। मगर अफसोस, मैं तुम्हें नहीं जानता। तुम्हारा नाम-धाम और ठिकाना नहीं जानता। इसलिये तुम्हें नाम देकर नहीं पुकार सकता। तुम्हारा नाम पुकारूँ भी तो इतनी सारी चीजों का नाम याद नहीं। मेरी आँखों के सामने जो है वही तुम हो। सर्वत्र तुम ही हो। मन करता है कि तुम्हारे पास जाऊँ। तुम्हारे साथ रहूँ। तुम में समा जाऊँ। इसलिये हे अनाम राही तेरे पास ले चलना है तो ले चलो। मैं तेरे पास जाने को लालायित हूँ। तुम्हारे प्रति मेरे अन्तःकरण की आवाज सुनो।

2. (क) अलंग दिसुम रे लंग हरा माता लेना

अलंग दिसुम रे लंग हारा माता लेना
मोदे रे गतिंग लंग इनुंग केना
जुड़ि-जुड़ि हो लंग सेने बेड़ाए
पाटी रे संगम लंग दुबे केना
चिकन काजि बोलेम अइउम लेदा?
हड़द सुकु लेकम हड़देन जना
अमगः मण्डा गेहोञ पिचा तनिः
दुबि रः दुम्बु लेकम रिकिरिकिन
चम्पा बा तिम्बुरूब जी रड़ेः तनिः
का होञ हड़दा सिबिल गेईञ
चिलकःए मेन्ते होञ नेका केना
मेन्दो जी रेम केटेः केदा।

मोंट कजि :– इनिः दो जी-कुड़म-मेद कोरे बारिंञ असुल लिमा। जी-जी रेगेईञं अगु लिया। जी-जी रेगे इनिः लोःईञ तई केना ...जी-जी रेगे इनिः लोः गोएन रःईञ काजि लः... इनिः लेल केया ते जी-जी रेगेईञ रसिका तन तई केना...।

मेन्दो रसिका कोः रेगे चनः होबावया? इनिः खयरव जना। का रेव गे, अलिंग दो अपन-अपन होड़ोमो तेलिंग.... अपन-अपन जी-कुड़म तेलिंग...... अपन-अपन मोने-मोतो लोब तेलिंग....। हे ओते एंगा दो जोनोमा ते कए जोका-जुड़ि लिः लिंग..... एंगा आपु किंग दो ससंग गुन्डा समड़ोम गुन्डा लेका जुड़िया कन ककिंग मेता लेः लिंग ...... ने लेका हालत रे भला अईञं इनियः ओकोए तनिः? जेता निओ दो का। एना मेन्ते अईञः होसोड़ो-तोरो बेड़ा कोगे इनियः सरते काजि बईयोः रेदो अईञ के दुकुन का होना चाई। मेन्दो जी नेका चि पतिया गे कए पतिया तना।

2 (क) हम धरती पर पले-बढ़े

हम धरती पर पले-बढ़े
प्रिय, हम एक साथ खेले थे
हम साथ-साथ चले थे
हम एक पंक्ति में बैठे थे
(लेकिन) तुमने कौन सी ऐसी बात सुन ली?
(कि) तीता लौकी की तरह हो गई
मैं तुम्हारी ही अनुगामी हूँ
(लेकिन) मुझसे रूठ गई।
चम्पा फूल सुगन्ध जैसा शान्ति देनेवाली
मैं तीता नहीं सरस ही हूँ।
कैसी है यही देखना चाहता था
(लेकिन) इसे ही जी में रख लिया।

भावार्थ :- मैंने तो उसको अपने हृदय में बसा लिया था। अपने दिल में बिठा लिया था। अपने मन से मान लिया था। उसको लेकर जी रहा था। उसको लेकर मरने का विचार कर रहा था। उसको देखकर मन ही मन खुश हो रहा था। पर ये सारे अपना मनोविनोद उसको नहीं बता रहा था। मन ही मन रीझ रहा था... मन में उमंग बढ़ रहा था........।

पर मन रिझाने से क्या होता है? उमंग बढ़ाने से क्या होता?........ हमारे शरीर तो दो थे......... हमारे हृदय तो दो थे....... हमारे दिल तो दो थे... ....। हमारे विचार तो भिन्न थे........। हमारी यह धरती माँ ने भी हमें गंगा-यमुना की जोड़ी करार नहीं दिया जिससे हम समन्दर में जाकर घुल-मिल सकें। हमारे जन्मदाता माता-पिता ने भी तो हमें नहीं कहा कि तुम दोनों की जोड़ी सोने और हल्दी के चूर्ण माफिक है। ऐसे मैं बेचारा उसका क्या हूँ? कुछ भी तो नहीं! इसलिये मेरे नकली रूठने का कारण उसके असली रूठने का कारण बन जाए तो मेरे मन को दुःख प्रकट नहीं करना चाहिये। पर दिल है कि मानता ही नहीं।

2. (ख) बलेः बलेः सोंगति गतिंग

बलेः बलेः रेलंग सोंगोति गतिंग
मोदेरे गतिंग लंग इनुंग केना
जुड़ि-जुड़ि हो लंग सेने बेड़ाए
पति रे संगईञ लंग दुबे केना
मोएवोद कजि गेलंग काजि केना
मोएवोद काजि तेलंग बपागड़ाव जना
पंति रे सगईञ लंग दुबे केना
दुबिरः दुम्बु लेकम रिकिरिकिञ
जी रेन उडुः चण्डाल का बुगिन तनिः
जुलेतन सेंगेल रे संदिड़िन लेका
निंदा सिंगि बोलेञ उडुः तना
अमगः नसीब 'राम' बंका जना

मोंट कजि :- अलंग दो होन-होन रेन सोंगे किंग। सते-सते रेलंग इनुंग केन खेला केन। होनोर बेड़ा केना लंग। पंति रे दुब केया ते मन्डि लंग जोम केना। अलंगः मेल-जोल पुरः गे बुगिन तई केना।

मेन्दो इदोड़ोः चिलका ते अम दोम हाँड़ा जना। अईञ दो नेया लेल कया ते खूबेईंञ दुकु जना। नेका दुकु दो जेता लेका खे का बेसेया। नेकन दुकु दो जुल तन सेंगेल रे हँड़ाबेन लेका गेदो तनः। नेका ठोरोः तना चि रामः नसीब गे बंक। जना हाय गोड़े तईञ दो।

2 ख. बचपन के हम संगी हैं

बचपन के हम संगी हैं
प्रिय हम साथ खेले थे
हम साथ-साथ चले थे
हम एक पंक्ति में बैठे थे
हम एक ही बात कहते थे
(किन्तु) एक ही बात से हम बिगड़ गये
हम एक पंक्ति में बैठे थे।
(लेकिन) मुझसे रूठ गई।
मन की चिंता भली नहीं
धधकती आग में कूदने जैसा
मैं दिन रात चिंतित हूँ
'राम' तुम्हारा नसीब टेढ़ा हो गया।

भावार्थ :- हम तो बचपन के दोस्त रहे हैं। साथ-साथ खेले हैं। साथ-साथ कूदे हैं। चले हैं। फिरे हैं एक पंक्ति में बैठ कर खाना खाए हैं। हर समय, हर बात में हमारा मेल था।

लेकिन पता नहीं क्यों, तुम मुझसे रूठ गई। मैं तो इससे बहुत दुखित हूँ। पर ऐसा दुखित होना भी ठीक नहीं। यह सब धूधकती आग में कूदने के जैसा ही तो है! लगता है आपन राम का नसीब ही टेढ़ा हो गया है, हाय!

3. एगञ अपुञ दुलड़ रे

एगञ अपुञ दुलड़ रे
हगा-मिसि सुगड़ रे
हुड़िंग सुकुञ तई केन रे
बुगिन कुमुईंग कुमुई निदा रे
जोबेञ मरंग सेंणा जन ते
कञ दुडुम तन अमः उडुः ते
जी तञ दोम कुम्बुडु केदा
इपए होड़ोमो परकोम रेगिञ
हाय विधि मोन पुरातम
नेया कामि रे होरा अड़ःतम
बिलिका तनए 'राम' लेलते

मोंट कजि :– हे भोगोमन अईञ होना कन लेका गे तई रिकाईञ में। एयंगः हतर रे दुडुम रिकाईञ में। बुसुः मचा रेगे इनुंग रिकाईञ में। चिमिन मजा ठोरोः तना। तोवा दो तोवा गे नूई में... एयंग आबा तः ते जगर, सेन को इतुई में...। एयंग काजि जदा अमगे अईञः सिंगि-चन्डुः। रः तन रे एयंग हपे जःईञा। लंदा तन रेदोईञ एयंग रसिका तना....। मेन्दो भोगोमनः चिमिन मरंग नीला-खेला मेनः। दिन दो सेनोः इदि तना। सेतः अईउब तना। अईउब सेतः तना। मोए अला कन बा को गसर गिड़ि तना। नः दोईञ हरा-माता जना। दंगड़ा जनईञ बिर-बिरू कोरे बा को अला कना। सोबेन मुलिंग हेता बिउर जदा। मगर हे भोगोमन नेरे ओकोए हपे-हपेः कोएवोः जःईञा। गोटा चन्डुः लेका मेद मुड़ा तीया। चंपा बा होड़ोमो.... लिंगि तन जोरो तन लेकाए जगर जःईञ...... आर नि अईञः जी गेः कुम्बुडु केदा।

3. जब माँ–बाप का प्यार था

जब माँ–बाप का प्यार था
जब भाई–बहन का प्रेम था
मैं कितना सुखी था!
कितने मधुर सपने देखे।
जब मैं बड़ा हुआ, होश सम्हाला
तुम्हारी याद में सो नहीं सका
तुमने मेरा जी चुरा लिया
खाट पर केवल शरीर पड़ा है
प्रभु मन की इच्छा पूरी कर दो
इस काम में राह छोड़ दो
यह देख 'राम' को दया आती है।

भावार्थ :– हे प्रभु मुझे शिशु ही रहने दो। माँ की गोद में ही सोने दो। पुआल के पालने में झूलने दो। बचपन में कितना मजा लगता है! दूध–मलाई खाओ। माँ–बाप से चलना–बोलना सीखो। हँसना–रोना सीखो। माँ कहती, नहीं नहीं तू मेरा चन्दा है, मैं चाँदनी तू ही मेरा सूरज भी है। मैं किरण। रोता हूँ तो माँ का दया सागर छलके। हँसता हूँ तो माँ के दिल में फूल खिले। आह!

लेकिन तू प्रभु की माया कितनी विचित्र है। दिन दिन बीतता जाता है। कलियों का सवेरा दोपहर में बदलता है। सांझ ढले फूलों का झरना ही जीवन का नाम दिया है तूने। अब मैं अंकुर के फूटन से कलियों को पार, भरी दुपहरिया में हँसते–इठलाते फूलों की बगिया में हूँ। मगर हे प्रभु यहाँ तो तुम्हारी माया विकट से महाविकट है। देखता हूँ कौन रूप की रानी फूलों में छुप–छुपकर दर्शन दे रही है। शान्त सुगन्धित बयार में खिलखिलाहटों चाँद–सा मुखड़ा। लाल पंखुड़ियों–सा होंठ। अथाह गहराई लिये नीले झील सी आँखें। चम्पा वर्ण बदन। इचा फूल के गूढ़ रस माफिक मधुर वाणी। बुलाहट, ओह! और उसने मेरा चैन चुरा लिया प्रभु, मेरा मन...।

4. डिंडा सोमय तईकेन

डिंडा सोमय तईकेन
पुलई तेगेम चबा जना
पोला तम दोना मई
निरल साड़ी तना
मईनम लन्दा तन गे
बोः रेदो सुतम बिण्डा
बिण्डा चेतन हसा चटु
सेन तदम न मई
जिड़िब जिड़िब तन
मईनम लन्दा तन गे
मयंग रेदो नीले साड़ी
साड़ी तम दो ओर तन गे
लेलोः तनम न मई
कदल दारू लेका
मईनम लन्दा तन गे।

मोंट कजि :- अम रे! अम दो मिद होना तेईञ इतुअना। मगर अम दो जः अईञ के कम इतुअना। हे, आर चिलकम इतुइया भला। चियाः चि अईञ आमागः जेतानिओ का। अम, अम रेगे मेनः मा। अईञ-अईञ रेगे। मेन्दो अईञ अम के मिद होना तेगेईञ लेल माता तः मा। चिलका गे अम हरा-माताओ तना एनका गे अमागः सोबेन राईन-जईन चईल-चोलोन अम लोः लेपेल-जापागर हाया किः ईञा।

4. जब कुँआरापन का समय था

जब कुँआरापन का समय था
तुम फूली नहीं समायी
वाह रे तुम्हारे पायल!
कितना मधुर बज रहा था
(और) सुनकर मुस्कुरा रही हो
सिर पर सूत का नेठो है
नेठो के ऊपर मिट्टी का घड़ा
लड़की! तुम्हारी चाल निराली
जिड़िब जिड़िब आवाज किये जा रही हो
और मुस्कुरा रही हो
कमर पर नीली साड़ी
साड़ी धूल में घिसती जाती है
तुम ऐसी लग रही हो
(जैसे) कोई केले का पेड़ हो
और मुस्कुराती जाती हो।

भावार्थ :– ऐ लड़की! मैं तुमको बचपन से देखता आ रहा हूँ। (शायद) तुम मुझे नहीं जानती हो। और जानोगी भी कैसे? क्योंकि मैं तुम्हारा कोई नहीं। तुम भी मेरा कोई नहीं। तुम अपने धन्धे में व्यस्त हो। मैं भी अपने धंधे में हूँ। लेकिन मैं तुमको बचपन से ही जानता हूँ। जैसे-जैसे तुम्हारी उम्र बढ़ रही है, तुम्हारी सारी गतिविधियों को देख-सुन रहा हूँ। इन्हें देख-सुन कर मेरे मन में उत्सुकता जाग उठी है। तुममें क्या-क्या एवं कैसे-कैसे परिवर्तन हो रहे हैं, इन्हें व्यक्त करने का यह मेरा उद्‌गार ही समझो।

5. जरगि दः

अबु असुल नगेन
बाबा सुड़ा संगेन
जरगि दः दो
तेबः लेना बुगिन
मेन्तेः काजितना
कामि पे सोबेन
गोजोः तना को जेटे ते
तेतंग तना को दः ते
सोबेन को नगेन
आउ तद दः सोंगे रे
मेन्तेः काजि तना
कामि पे सोबेन
साड़ि तना रिम्बिल
उइउः तना अरिल
सोबेन दिसुम
होबा जना बेरेल
मेन्तेः काजितना
कामि पे सोबेन

मोंट कजि :– ओड़ोः जरगि दः तेबा लेना। गड़ा को, पुकुरी को पेरेगोः तना। सोबेन मुलि दः गे दः चपाचुड़ी। दः दो अबुअः जीदेन तेयाः रनुः-रसे। दः रेगे अबुआः जंग जिलु आर होड़ोमो। सोबेन जीव-जन्तु तसद रूड़ाः बिर-दरू कोराः आबुआः रसे। किसड़ाँ कोआः नगेन ओतेः लुम जदा। बाबा एंगा कोदे एंगाए होबा जः किंग। अबुआः नगेन नेया खूब जरूड़ु मेनः। साल का साल नेया गमा रः रूप रेबु नम जदा। मगर ने गमा हुड़िंग अबु तः तेवाए असरए-असरए तना-लेकाईञ ठोर नम जदा। गमा दः नेका अबु के काजियाबु तना।

5. बरसात

हमारे पोषण के लिये
धान की ये बालियाँ
भाइयो, यह बरसात है
आखिर आ ही गया है
इसीलिये कहता है
आओ सब काम करो
गर्मी में झुलस रहे हैं
प्यास से मर रहे हैं
सबके लिये
लाया है साथ में पानी
इसलिये कहता है
आओ सब काम करो
बादल गरज रहे हैं
ओले बरस रहे हैं
सारी धरती
गीली पड़ गई
इसीलिये कहता है
आओ सब काम करो।

भावार्थ :– फिर बरसात आ गया है। नदी तालाब भर रहे हैं। किसान खेत में हल जोत रहे हैं। सब तरफ पानी ही पानी है। पानी हमारा जीवनामृत है। पानी हमारा रक्तबीज है। प्राणी मात्र का पोषक है। पानी के बिना मछली नहीं। पानी के बिना इन्सान नहीं। पानी हमारा जीवन-स्रोत है। यह हम किसान भाइयों के खेत भिंगोता है। फसल उगाता है। पानी हमारे लिये अति महत्वपूर्ण है। यह हर साल हमारे लिये वृष्टि के रूप में आता है। मगर यह हमसे कुछ अपेक्षा भी करता होगा, ऐसा मुझे लगता है। वर्षा शायद हमसे ऐसा कहता होगा।

6. इसु सुकु–दुकु तेबु तेबः नम तदा

इसु सुकु–दुकु तेबु तेबः नम तदा
सोना लेकन बा चण्डुः मुलुअ कना
जनाओबु सुसुन रे सोंगति गतिंग
कारेबु बपागेय पीरिति संगञ
ने हातु ताला रेबु जोनोमा कना
ओकोए जीदोः ओकोए गोजोः मेनःबुआ
जनाओ बु सुसुनरे सोंगोति गतिञ
का रेबु बपागेया पीरिति गतिञ
सोना लेकन बा चण्डुः सेनोः जन रेदो
का रेबु नमेय जादुर सुसुन
जनाओ बु सुसुन रे सोंगोति गतिञ
का रेबु बपागेय सोंगोति गतिञ

मोंट कजि :– हगा ओड़ोः मिसि को साल रे मिसा आर मिसा गे हिजुः तना ने बा नेग। सते रे पुरः लेका सुकु रसिका रसे कोए अउ तोरसा जदा। ने सुकु रसिका लेकन दिन रे चन्डुः सड़िमा चेताना ते कोएवो....तना। इनिः अबु के रसिका तन लोःए रः जः बुआ चि एला हो हगा–मिसि को एला खूब सुकु रसिका तेबु सुसुन–दुरंगया, चियाः चि नेया दो रसिका रः चन्डुः तनः। आर नेयावगेचि ने नेग दो मिद साल तयोम दुकु–तकलीफ को लेल–सातिंग केया ते तेबः कना। ने लेकन सोमय रे अईञ जी दो हुड़िंग जगारेः सनंग तना।

6. अनेक सुख–दुख के बाद पहुँचा है

अनेक दुःख तकलीफ के बाद हमें नसीब हुआ है।
सोने सा सरहुल का चांद निकल आया है।
मित्र, हम रोज नाचेंगे गायेंगे
हम एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ेंगे
इस गाँव में हम पैदा हुए हैं
कौन जीएगा कौन मरेगा ऐसा है
दोस्त हम रोज नाचेंगे गायेंगे
हम एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ेंगे

सोने सा सरहुल का महीना बीत जाने पर
जदुर नाच फिर नहीं मिलेगा
बन्धु, हम रोज नाचेंगे गायेंगे
हम एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ेंगे।

भावार्थ :- भाइयो एवं बहनों, साल में एक बार और सिर्फ एक बार सरहुल का त्योहार आता है। अपने साथ ढेर सारी खुशियाँ लेकर आता है यह। इस खुशियाली में चांद भी हमारे घरों के ऊपर दस्तक देता है। वह हमें पुलकित मन से उकसाता है कि हे भाइयो आओ, सरहुल में खुशियाँ मनाओ, खूब नाचो गाओ। क्योंकि यह खुशियाँ मनाने का महीना है। और यह भी कि यह त्योहार साल भर बाद अनेक दुःख-तकलीफ सहकर हमें नसीब हुआ है। ऐसे में मेरा मन तो आप सभी को और कुछ कहने को चाह रहा है।

7. हेन्दे होड़ोमो जिलिब लेकन तोअउ चेणें

हेन्दे होड़ोमो जिलिब लेकन तोअउ चेंणें
दारू-दारू चेणेंम दाड़ाबेड़ाए
नवा सुड़ा दाड़ा जुम्बड़ भीतर
कुहू-कुहू चेंणेम रागे बेड़ाए
बिर दारू बाते तोपा कना
गुतुईंग गलंगयईंग ओकोए नगेन?
ने लेकन सुगड़ सोमय फओः तन चेंणें
का गेचा हिजुः रूअड़ा बड़े
अञ लेका गेचिम उडुः तना?
कुहू-कुहू बोलेम रागे बेड़ाए
अमः नसीब राम बंका जना
बपरि गोड़े सेंगेल तेञ ओन्डोर तना।

मोंट कजि :- सोमय चन्डुः (ऋतु) कोरेन राजा बा चन्डुः मुलु लेना। बिर दारू कोतो कोरे नवा सुड़ा सकम को जिरपी-जलंग लेलोः तना। बा सुगड़ सोवन लिबि-लिबि होएवो रे लिंगि तना। हुरूम सुकु को रों-रों तना। मेन्दो तोवाउ चेणें अम उलि बगाईचा कोरेम तोवाउ-तोवाउ बेड़ा जदा। अम अईउम केया ते अईञ दोईञ

दंदा गिड़ि जना चि बा चन्डुः रसिका सोमय नगेनेम रः तना चि रगिका सोमय सेनोः तनः रःम रः तना? सोमय दो सेनोः इदि तना। आला कन बा को उरूडु गिड़ि तना। ओह! ओकोया नगेन बाईञ गुतु–गलंए? अईञाः दो जेतए बकुआ। चेणें काजि में ओकोया नगेन बाईञा गुतु....? नेया उडु–उडु ते जी रटि लो तना। ओह! अईञाः नसीब गे बंका जना चेणें नसीब गे बंका जना......।

7. काली चमकीली कोयल पंछी

काली चमकीली कोयल पंछी
तुम डाल–डाल फुदकती फिरती हो
नई कोंपलोंवाली डालों पर
कुहू–कुहू गाती फिरती हो
वन वृक्ष फूलों से लदने जा रहे हैं
मैं किसके लिये माला बनाऊँ?
ऐसा सुअवसर चला जा रहा है
यह फिर वापस नहीं आयेगा
क्या तुम भी मेरी ही तरह चिंतित हो?
(कि) कुहू–कुहू गाती फिरती हो
राम तेरा नसीब टेढ़ा हो गया
हाय, मैं आग में जल रहा हूँ।

भावार्थ :– ऋतुराज वसंत का आगमन हुआ है। वृक्षों की डालों पर नई कोपलें लहलहा रही हैं। वन वृक्ष फूलों से लद रहे हैं। सुगन्धित वसंत बयार मन्द–मन्द बह रही है। भौंरे गुंजन कर रहे हैं। पर कोयल तुम हो कि आमों के झुरमुट में कुहू–कुहू करती फिरती हो। मैं तुम को सुनकर हैरान हूँ कि वसंत के आने की खुशियाली में गाती हो या वसंत के जाने के दुःख में रोती हो? मैं तो बेहद दुखी हूँ। दुखी के साथ–साथ बदनसीबी भी हूँ। देखो वसंत ऋतु तो दिन–दिन बीतता जा रहा है। फूल फीके पड़ते जा रहे हैं। मेरे हाथ से सुअवसर चला जा रहा है कि मैं किसके लिये माला गूँथूँ? मेरा कोई प्रियजन नहीं। पंछी बता, मैं किसके लिये माला पिरोऊँ? मैं सोच–सोच कर चिंता में जल रहा हूँ। आह! राम तेरा नसीब टेढ़ा है, राम टेढ़ा है।

8. अलंग दिसुम रेलंग जोनोम जना

अलंग दिसुम रेलंग जोनोम जना
पुतम लेका होलंग जुड़ि जना
अलंगः गमय रेलंग माता जना
पराय लेका होलंग जोता जना
पुतम लेका होलंग जुड़ि जना
मोदेरे गतिंगलंग सुसुन करम
पराय लेका हो लंग जोता जना
अलंग जी सोबेन मोदे जना
मोदेरे गतिंग लंग सुसुन करम
का रे गतिंग लंग बपागे
अलंगः जी सोबेन मोदेजना
जीदन सुमुंग लंग अपासुला।

मोंट कजि :– सोगंति गतिंग अईञ मियद जी भीतर रः जगरेईञ जगरम तना। अम दो जाः कम इतुआना। आर चिलकम इतुईया भला? चिया चि जी–जी रेगेईञ उदुबम तना। अलंग ने ओते–हसा रेलंग जोनोमा कना। अईञ दो नेकईञ ठोरेन तना चि अलंगः जोका–जुड़ी खूब जुगुतुआ कना। जाँए के नेका सुगाड़ा जोका–जुड़ी बनोगा। अईञ लेल नम जदा चि अलंगः जुड़ी जोनोका पुतम आर पराय को लेका जुगुतुआ कना उकुन कुचि मिसा तेतेगे को अपिर बेड़ा.... मिसा तेगे को अतिंग बेड़ाः। जी मेन जदा चि अलंगवो गे नेका मिसा–मिसा ते जीवोन जीनीद जकेद सते रेलंग तईन का।

8. हम इस धरती पर जन्मे

हम इस धरती पर जन्मे
पंड़की की तरह हमारी जोड़ी रही है
हम इस मिट्टी पर पले हैं
कबूतर की तरह जुट गये हैं
पंड़की की तरह जोड़ी रही
हम एक साथ नाचे गाए
कबूतर की तरह जुट गये
हमारे मन-प्राण एक हो गये
एक साथ ही नाचे गाये
हम साथ नहीं छोड़ेंगे
हमारे मन-प्राण एक हो गये
जिंदगी भर साथ निभाएँगे।

भावार्थ :- हे प्रिये, मैं तुमको एक रहस्य की बात बताने जा रहा हूँ। शायद तुमको पता नहीं। और पता भी कैसे लगे? क्योंकि मन ही मन तुमको बता रहा हूँ।

हम इस धरती पर जन्म लिये हैं। मेरी मन-आँखें हम दोनों को गौर फरमा रहे हैं कि हमारी जोड़ी बेजोड़ है। कहीं इसका मिसाल नहीं। मैं देखता हूँ कि हमारी जोड़ी पंड़की और कबूतर की तरह है जो जहाँ जाते साथ-साथ जाते। साथ-साथ खाते-पीते......। मन करता है कि इसी तरह हम जिन्दगी भर एक दूसरे का साथ निभाते रहें।

9. रबंग तयोमेतेम हिअःकना

रबंग तयोमेतेम हिअःकना
राजा-रानी लेकम समपोड़ोआ कना
इसु दिना तेञ उडुः केना
मेन्दोम मुलुः लेना बाचण्डुः
पुरना सकम ओचोः केते
नवा सुड़ा साड़ीम ओमे तदा
बिर ते दारू कोईंग लेल आउ केना
मोए तना बा जो तना
हरियाली अरः सुड़ा साड़ी लेका
चिकन सुनुमेदोम गोसोः कदा?
बिर कोरे बा बुगिन सोअन!
बिर दारू सुबा रे 'राम' सोम्बोदा कना
सिरमा रेन सिंह बोगाए जोअर तना
बायले मेन्ते गोड़ेंईग रसिका तना
तरा कोते सरजोम बाए असि तना।

मोंट कजि :– चिमतंगएम हिजुआ..? सेकेड़ा हिजुः में तईञ रानी..। कंताते उईउकन, सेंगेल जपः रे जिरूबा कन कोरे नेका गेईञ उडुः कते मा। आर इसु दिन तिंगु-तंगी केया ते तिसिंग अईञः मोने पुरा जना। सिरमा सःईञ संगिल रकब लः। जी रे विश्वास का हिजुः जना। मेन्दो अईञः सोंगे को काजियाईञ तना चि नि दो अमगे तनिः उकुनि चि मिद चन्डुआ तेईञ तिंगु तंगी, लेल होरा तन तई केना। अमः लुतुम को उदुबःईञा 'बा चन्डुः' हातु को उदुबःईञा झारखण्ड। ओह। चिमिन सुगाड़ा सोरोगो लेकन दिसुम। हे सुगाड़ा बारि गेदो बंमे। देगावम देंगः। चियः चि अम ऋतु कोरेन राजा 'बा चन्डुः' के सते रेम अउ जःईआ। ओह! चिमिन सुगाड़ा रसिका सोमय। सोबेन मुलि अमगे अम लेल नमोः तना। अब लेल केया ते अईञः जीगे अलय-बलय चबा जना।

9. जाड़े के बाद आये हो

जाड़े के बाद आए हो
राजा-रानी की तरह सज कर आये हो
बहुत दिन से प्रतीक्षा कर रहा था।
सरहुल का चांद तुम निकल ही आया
पुरानी पीली पत्तियाँ छोड़कर
नई कोंपलों की साड़ी पहिनी हो
वन वृक्षों को देख आया
खिल रहे, फूल रहे फल रहे हैं
हरियाली और लालिमा का यह सौंदर्य
तुमने कौन सा तेल लगाया?
मेरे अन्दर घुल रहा है।
वृक्ष तले 'राम' झुका हुआ है
स्वर्ग के सिंहबोंगा देवता को प्रणाम करता है
सरहुल मनाएँगे इसकी खुशी है
साखू फूल की एक डाल मांगता है।

भावार्थ :- कब आयेगी तू? चली आ... मेरे मन की रानी चली आ..। कांथा से ओढ़े हुए, अलाव के पास बैठे हुए, कुछ ऐसा ही मेरा उदास, प्रतीक्षारत मन तेरा गुणगान करता रहता था। महीना भर प्रतीक्षा करने के बाद मेरी मनोकामना पूर्ण हुई। अपनी आँखों के सामने तुम्हें पाकर। कांथा छोड़ा। अलाव छोड़ा। बाहर निकला। ऊपर आसमान की ओर ताका। मेरी आँखों को विश्वास नहीं हो रहा। पर मेरे बन्धु-बांधव, मित्र-कुटुम्बों ने कहा कि यह तो तुम ही हो जिसकी मैं महीनों से प्रतीक्षा कर रहा था। तेरा नाम बताया 'सरहुल का चाँद'। धाम बताया 'झारखण्ड का जंगल' ओह! स्वर्ग की अप्सराओं, जगत् के इन्सानों के कितने ही सुन्दर मुखड़े तेरे मुखड़े की सुन्दरता से आंके जाते रहे हैं एवं अब भी आंके जाते हैं - चाँद-सा मुखड़ा! हाँ, तू केवल सुन्दरता की मूरत ही नहीं परोपकारी भी है क्योंकि तू हमारे लिये ऋतुराज वसंत को लेकर आयी है। ऋतुराज वसंत का क्या कहना! नयी प्रकृति का सृजनहार है वसंत। ढेर सारी खुशियाँ.... ढेर सारे उमंग...। इन सारी चीजों में तुम ही तुम दिखाई देते हो, सिर्फ तुम... आँखों में तुम... प्रकृति में तुम...। तुझे देखकर मेरा दिल खिल-खिल जा रहा है। और मुँह से एक लालचभरी आवाज निकल पड़ती है।

10. समोड़ोम लेका गेको जोगाव लेद मेया

समाड़ोम लेका गेको जोगाव लेद मेया
बलेः बलेः मुलुः चण्डुः लेकम
हारा माता जना
पूर्णिमा चण्डुः लेकम मेद मुड़ा जना
तुरे तन सिंगि लेकम मरेसल केदा
किताहातु तला तेदो हटिया होरा
पलः पलः गोमे सेने बेड़ाए
हातुआते सिंगि तुरोः गगरि डाड़ी
चेले चेपेले गोम बुरः गे
लन्दा जगर आर होनोर बेड़ा
सिदा रेयः टँयद गो उड्डु लेमे
गगरि डाड़ी दोरे अमगेः रगे
अमगः बदला दो ओकोए बुरागे?
गोंग में दिने दोगे तेबः लेना
डिंडा रेअः सुकु सोबेन सेनोः जना
अमगः जी रेअः उड्डुः आर मोने
सोबेन हासा रेगे जमा जना

मोंट कजि :– हे सोंगति गतिंग होना तेगे अमके सोना लेका को जोगव आउ लेद मेया। तोवा मन्डि जोम को ओम लेद मेया। बा लेका लेगेन–लेगेन कंता रेको गितिः लेःमा। एना तेगे बलेः मुलुः चन्डुः लेका सुगडम मेद मुड़ा कना। तुर तन सिंगि लेका गोटा हातुम मसकल केदा। हातु लतर गगरी डाड़ी चेले चेपेल दःम अगुई। नःदो अमः गोंमे दिन मुन्डि तेबः लेना। ओह! सिदा रः दुनुब ठांव को उड्डुः लेम। गगरी डाण्ड़ी दो अमःगे रः तन। नः दो ओकोए बुरा गे? नः दो अमः डिंडा रः सोबेन सुकु सोमय चबा जना। सोबेन कुमु को हसा रे जमा जना। ओह रे तई गोड़े जला!

10. सोने की तरह तुझे संजोया गया

सोने की तरह तुझको संजोया गया
नये चाँद की तरह पली बढ़ी
पूर्ण चाँद-सा मुखड़ा मिला
उगते सूरज की तरह प्रकाश फैलाया।
किताहातु गाँव के बीचोंबीच कच्ची सड़क
छमक छमक आवाज करते हुए चला करती हो
गाँव के पूरब गगरी डाड़ी से
छल-छल कर पानी भरती हो।
हँसना, बोलना और घूम चलना
बीते जमाने की बात तो याद कर लो
गगरी डाड़ी तो तुम्हें ही बुलाती है
तुम्हारे बदले कौन पानी भरे?
तुम्हारी शादी का दिन आ गया
कुँवारेपन का सारा सुख चला गया
तुम्हारे मन की अभिलाषाएँ
सारी की सारी मिट्टी में मिल गयीं।

भावार्थ :- हे प्रिये, बचपन से ही तुमको सोने-चाँदी जैसा संजोया जाता रहा। दूध मलाई खाने को दिया जाता रहा। फूल के सेज पर सुलाया जाता रहा इसलिये तुम चाँद-सा मुखड़ा लिये सुन्दर दिखती हो। उगते सूरज जैसा सारे गाँव को जगमगाए हुए हो। गाँव के किनारे गगरी चुआँ से पानी भरती रहती हो। अब तुम्हारा सगाई का दिन आ पहुँचा। अब गगरी चुआँ से पानी भरने कौन जायेगी? गगरी चुआँ तो तुम्हें ही पुकार रही है। अब तुम्हारे कुँआरेपन का सारा मजा खत्म हो गया। ओह! हमारे पूर्व के मिलन स्थलों को तो याद कर लो! अब हमारा संजोया सपना ही सब मिट्टी में मिल गया... चूर हो गया। हाय...!

11. मोदे कोतो सरजोम बा

मार्फत भोला मुण्डा, किताहातु
दिनांक 21.03.2004

मोदे सरजोम बा
मोदे कोतो सरेः गईंग में
बरे दाड़ा सुड़ा संगेन
बरे दाड़ा नेडे लंग में
मोदे कोतो होईग सरेगाईञ में
चि होम चिकाया?
बरे दाड़ाईंग नेडेला में
मेरे होम रिकाया?
मोदे कोतोम सरे गाईंग रे
बा होईग गुतुईया
बरे दाड़ाम गेडे लाईंग रे
डाली होईग मलंगया

मोंट कजि :– सेतः सेतः रेगे सरजोम बा ते लदिया कन सरजोम बा पेटेः तन संगाईञ लेल नम तःई चि अचका गेईञ ठोर नम केदा चि तिसिंग दो बा नेग लेकन दिन तनाः। आर सिदा सिरमा रेन रिड़िंग गिड़िया कन सोंगेवो गे बा नेग रे रः रूड़ाई रः उडु जी रे हिजुः जना। एना मेन्तेगे इनिः के मियद कोतो सरजोम बा असि रःईञ विनती जःईया।

11. सखुआ फूल की एक डाल

सखुए फूल की एक डाल
एक डाल मेरे लिए बचा के रखना
नई कोपलों वाली दो डाल
दो कोपलें मेरे लिये छोड़ दो।
एक डाल बचा के रखा तो
उसे लेके क्या करोगे?
दो डाल छोड़ दूँ तो
उन्हें किस काम में लाओगे?
एक डाल बचा के रखोगेतो
फूल माला बनाऊँगा
दो डाल छोड़ दोगे तो
कान पर खोंसेंगे।

भावार्थ :– सुबह ही सुबह सखुआ फूलों से लदा वृक्ष पर फूल तोड़ते अपने पड़ोसी भाई को बरबस देख पाता हूँ तो अचानक याद आती है कि आज सरहुल त्योहार का दिन है। वर्षों से बिछुड़े साथियों को सरहुल में बुलाने का मन भी बनता है। और बस, उससे एक डाल देने का आग्रह करता हूँ।

12. किताहातु

मार्फत भोला मुण्डा, किताहातु
दिनांक 21.03.2004

किताहातु तला तेदो सरकारी संड़का –
पलः पलः मईएम सेने बेड़ाए –
हातु अतोम गगरी डाड़ी –
चेले–चेपेले गोम बुरःए बेड़ा –
अमे चि मईन को गोंग जद मे?–
पताड़ा बकिड़ि को बकिड़ि तदा –
अमे चि मईन को चले जद मे –
गितिल मण्डोवा को दुला कदा –
गोंगए दिने बोले तेबः लेना –
डिन्डा सुकु सोमय चबा जना –
चले मे दिने बोले नोसोर लेना –
डंगुआ नुसड़ा बोले बिरिद जना –

मोंट कजि :– किताहातु हातु। ओह! अईञः सोंगति गतिंगः हातु किताहातु। अईञः कुमु रे लेया–लाई तन दिसुम किताहातु। खूँटी–तमाड़ संडका आतोम 13–14 कोस संगिन रे डी–डुंगरीया कन किताहातु। सिंगि तुरोः रे गगरी हाड़ी ओड़ो कुड़ापुर्ति मिडिल स्कूल। स्कूल रः दुआरा ते गगरी डाड़ी लेलोः तना। स्कूल रेईञ मास्टरा कना। गगड़ी झड़ीया ते दः अगु जरे इनिःईञ लेल कते जःईया। अईञाः जी लेल जःई लोःगे अलय–बलय तना। जी–जी रेगेईञ उडुः तना जाँन नेग को जाः ओड़ाः रे ठारावा कना। कुम्बुडु–कुम्बुडु तेईञ पता केदा दो जी गे उटंग गिड़ि जना। इनिः गोंगई रः दिन मुन्डि तेबः कना। एनाते पताड़ा बकिड़ी को बकिड़िया कदा। रचा रे गितिल मन्डोवा को दुला कदा। एन लोः सिरमा रेन सिंह बोंगाईञ रः किया चि हे भोगोमन अलिंञः काजिः अमतंग रः हिरिति पिरिति अलोम ओदेया। सिंह बोंगा अईञः काजिः अईउम केदा ओर अईउब सः इनिः के मेतः ईया–दोलंग नः दो अले ओड़ाः ते। ती रेईञ सबकिः चि अले ओडःईञ ईदि किया।

12. किताहातु गाँव

किताहातु गाँव के बीचोंबीच ये सरकारी सड़क
छिमिर छिमिर कर चलती फिरती हूँ
गाँव के किनारे गगरी डाड़ी
छल छल करती हुई भरती रहती हो
क्या तुम्हारी शादी होनेवाली है?
डालों से आंगन को घेरा गया है।
क्या तुम्हाई सगाई हो रही है?
बालू से मण्डप लिखा गया है
विवाह का दिन तो आ पहुँचा
कुँआरेपन का सारा सुख समाप्त हो गया
सगाई का दिन तो पक्का हो गया
जवानी का सारा मजा खत्म हो गया।

भावार्थ :– किताहातु गाँव। ओह! मेरा स्वर्ग! मेरे अप्सरा का स्वर्ग महल किताहातु। मेरे सपनों का लहलहाता संसार। मेरा मन-संसार। मेरे पिया का गाँव किताहातु। मेरे पिया का घर किताहातु। खूँटी-तमाड़ कच्ची सरकारी सड़क के आजू-बाजू कोई 13-14 कोस की दूरी पर बसा किताहातु गाँव। पूरब में गगरी डाड़ी और मिडिल स्कूल है। स्कूल के दरवाजे से गगरी डाड़ी साफ दिखता है। मैं वहाँ बतौर शिक्षक हूँ। सड़क के आर-पार जब बार-बार आती-जाती, गगरी डाड़ी से पानी भरकर लाती हुई उसे देखता हूँ तो मेरा मन घबराने लगता है कि उसके घर में कोई नेग दस्तूर तो नहीं हो रहा? भेदिया से पता किया तो होश गुम हो गये। मन पंछी दूर नील गगन में उड़ चला।भाई साब उस घर में क्या हो रहा है? नये पत्तों से पण्डाल सजाया है।आप नहीं जानते मास्टर साहब? वहाँ सुँड़की नाम की लड़की है न, उसकी शादी होनेवाली है। ओ अच्छा, अच्छा। उस लड़की की शादी......।

हे सिंहबोंगा हमें बचाओ। हमारे प्रेम को बचाओ। हमने एक दूसरे को प्यार किया है। कोई चोरी नहीं की है। हमारे दिलों को न दुखाओ प्रभु.....। .... और प्रभु ने हमारी विनती सुन ली। मेरा आघात मन पिया के सामने दुस्साहस कर डाला –'प्रिये, अब मेरा घर चलो।' 'प्यार झुकता नहीं।' शायद सिंहबोंगा इसी को चरितार्थ कर रहा था। इसीलिए मुझे माफ कर देना दुनिया वालो! दिल पे यों रोया मैं!

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

ISBN : 978-93-85595-09-7

978-93-85595-09-7

मूल्य : 100.00 रु.